# DSSSB TGT & PGT

## Part-B

## SCHOLAR BATCH

# MODERN HISTORY

# Congress

Part -9

# बंगाल में क्रांतिकारी आन्दोलन

क्रांतिकारी आतंकवादी आन्दोलन के द्वितीय चरण के दौरान बंगाल पुनः क्रांतिकारी गतिविधि को गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बन गया। अनुशीलन और युगान्तर जैसी पुरानी क्रांतिकारी समितियां पुनः सक्रिय हो उठी। सी० आर० दास की मृत्यु (1925) के बाद बंगाल में कांग्रेसी नेतृत्व दो गुटों युगान्तर गुट तथा अनुशीलन गुट में विभाजित हो गया।

i) युगान्तर गुट सुभाष चन्द्र बोस के साथ तथा अनुशीलन गुट जे० एम० सेन गुप्त के साथ।

ii) इन गुटों के एक सदस्य गोपीनाथ साहा ने 1924 में पुलिस कमिश्नर टेगार्ट की हत्या का प्रयास किया किन्तु गलती से एक अंग्रेज मारा गया। साहा को गिरफ्तार कर फांसी दे दी गई।

- हेमचन्द्र घोष तथा लीला नाग ने बंगाल स्वयं सेवक संघ तथा अनिल राय ने श्री संघ नामक संगठन की स्थापना की। नये क्रांतिकारी संगठनों में चटगाँव क्रांतिकारियों का गुट सबसे अधिक सक्रिय था; जिसके नेता सूर्यसेन थे।
- सूर्यसेन को लोग प्यार से 'मास्टर दा' कहते थे। वे 1929 में चटगाँव जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे। आयोग आन्दोलन में इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।
- सूर्यसेन ने इण्डियन रिपब्लिकन आर्मी की स्थापना की थी। इसकी चटगाँव शाखा के सदस्यों में अनन्त सिंह, अम्बिका चक्रवर्ती, लोकीनाथ, बाउल प्रीतिलता वाडेकर, गणेश घोष, कल्पना दत्त, आनंद गुप्ता और टेंगारबल प्रमुख थे।
- इण्डियन रिपब्लिकन आर्मी की चटगाँव शाखा में कुछ मुसलमान सदस्य भी थे जिसमें सत्तार, मीर अहमद, फकीर अहमद और तनु मियाँ थे।
- 18 अप्रैल 1930 को सूर्यसेन के नेतृत्व में चटगाँव, बारीसाल तथा मेमन सिंह स्थित सरकारी शस्त्रागारों पर कब्जा कर लिया गया।
- दूसरी ओर लोकीनाथ बाल के नेतृत्व में कुछ युवा क्रांतिकारियों ने सैनिक शस्त्रागार पर कब्जा कर लिया।
- शस्त्रागार पर कब्जे के बाद 65 सदस्यीय क्रांतिकारी दल के समक्ष सूर्यसेन ने इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा लगाया और तिरंगा झण्डा फहराया तथा अस्थायी सरकार का गठन किया, जिसके राष्ट्रपति ये स्वयं बने।

Digvijay Sir GS

⇒ 22 मई 1930 को ब्रिटिश सेना तथा आई० आर० ए० (इंडियन रिपब्लिकन आर्मी) के सदस्यों के बीच संघर्ष हुआ। क्रांतिकारियों ने शस्त्रागार में आग लगा दी एवं सूर्यसेन तथा अंबिका चक्रवर्ती के नेतृत्व में जलालाबाद चले गये।

⇒ 16 फरवरी 1933 को सूर्यसेन गिरफ्तार कर लिये गये। उनके ऊपर मुकदमा चला और 12 फरवरी 1934 को उन्हें फांसी दे दी गई।

⇒ बंगाल के आतंकवादी आन्दोलन में युवतियों ने बड़े पैमाने पर भाग लिया। प्रीतिलता वाड्डेकर ने पहाड़तली (चटगाँव) में रेलवे इंस्टीट्यूट पर छापा मारा और इसी दौरान मारी गयी।

⇒ कल्पना दत्त को सूर्यसेन के साथ गिरफ्तार कर आजीवन कारावास की सजा दी गई।

⇒ दिसम्बर 1931 में कोमिल्ला की दो छात्राओं शांतिघोष और सुनीति चौधरी ने एक जिलाधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी।

⇒ फरवरी 1932 में बीनादास ने दीक्षांत समारोह में गवर्नर पर गोली चलाई थी।

⇒ इस प्रकार बंगाल में क्रांतिकारी गतिविधियाँ काफी तीव्र रहीं। युवाओं के साथ साथ युवतियों ने भी सक्रिय भागीदारी निभायी। किन्तु सूर्यसेन की मृत्यु के बाद बंगाल से क्रांतिकारी गतिविधियों का अन्त हो गया।

## पंजाब

① क्रांतिकारी आन्दोलन के दूसरे चरण में पंजाब में नवजवान सभा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

② पंजाब में नवजवान सभा की स्थापना 1926 में हुई। इसके संस्थापक भगत सिंह, छबील दास और यशपाल थे। इसके कार्यकर्ताओं में केदारनाथ सहगल, शार्दूल सिंह कवीश्वर, मेहता आनन्द किशोर तथा सोटी पिंडी दास थे।

③ भगत सिंह नौजवान सभा के संस्थापक महामंत्री थे।

④ इस संगठन के तत्वाधान में भगत सिंह और सुखदेव ने लाहौर छात्र संघ का गठन किया।

⑤ भूपेन्द्र नाथ दत्त, डाँगे, फिलिप स्प्रेट और जवाहर लाल नेहरु ने नौजवान सभा मीटिंग में भाषण दिया था।

⑥ नौजवान सभा ने रूस के साथ मित्रता सप्ताह तथा काकोरी दिवस मनाया।

⑦ भगवती चरण वोहरा ने चन्द्रशेखर आजाद के अनुरोध पर 'दि फिलॉस्फी ऑफ बम' नामक दस्तावेज तैयार किया।

DigvijayGS

# साइमन कमीशन एवं नेहरू रिपोर्ट

## साइमन कमीशन -

⇒ 1919 के भारत सरकार अधिनियम की धारा 84 में यह व्यवस्था की गई थी कि 10 वर्ष के पश्चात इस अधिनियम के अंतर्गत लागू व्यवस्था के मूल्यांकन हेतु एक आयोग का गठन किया जाएगा'।

⇒ गठन - 8 नवम्बर 1927

⇒ भारत सचिव - बरकनहेड द्वारा गठन की घोषणा की गयी।

⇒ अध्यक्ष - जान साइमन (साइमन कमीशन कहा गया)

⇒ 7 सदस्यीय आयोग था।

⇒ इसमें एक भी भारतीय नहीं थे, इसलिये भारतीयों ने इसके विरोध का निर्णय लिया।

⇒ राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1927 के अपने मद्रास वार्षिक अधिवेशन में इस आयोग का हर तरह से बहिष्कार करने का निर्णय लिया। (अध्यक्ष - एम. ए. अन्सारी)

⇒ दिनशा ई. वाचा जैसे अखिल भारतीय उदारवादी नेताओं ने आयोग के विरोध में एक घोषणा पत्र निकाला, जिस पर कांग्रेस को छोड़कर भारत के सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किए।

⇒ सहयोगवादी डॉ. बी. एस. मुंजे के नेतृत्व में हिन्दू महासभा ने, सर तेज बहादुर सप्रू के नेतृत्व में लिबरल फेडरेशन ने तथा अन्य पार्टियों ने कहा कि कमीशन का बहिष्कार किया जाना चाहिए।

⇒ एनी बेसेंट उस समय इंग्लैंड में थी। डॉ. बेसेंट ने इसे 'जले पर नमक छिड़कने के समान बतलाया।

⇒ कांग्रेस ने भी इसका विरोध करने का निर्णय लिया था। मोतीलाल नेहरू उस समय ब्रिटेन में थे। उन्होंने ने भी कमीशन की नियुक्ति को तमाशा ही बताया।

⇒ कांग्रेस के युवा वर्गों ने आयोग के विरुद्ध सभी स्थानों पर काले झंडे के प्रदर्शन की व्यवस्था की।

⇒ मुस्लिम लीग में विरोध के प्रश्न पर फूट पड़ गयी। मुहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने जहां आयोग का विरोध करने का निर्णय लिया, वहीं मोहम्मद शफी के नेतृत्व में लीग का एक गुट आयोग

Digvijay Sir GS

से सहयोग करने के पक्ष में था और इसलिए वह गुट लीग से अलग हो गया।

⇒ मोहम्मद अली जिन्ना – "जलियावाला बाग कांड यदि हमारी भौतिक हत्या थी तो साइमन आयोग हमारी आत्मा की हत्या"

⇒ भगत सिंह ने भी उत्तर भारत के क्रांतिकारी दल के सम्मुख आयोग पर बम फेंकने का एक प्रस्ताव रखा, जिसकी स्वीकृति तो मिल गई, परंतु साधनों के अभाव में बम का निर्माण संभव नहीं हो पाया। फलतः यह योजना प्रारम्भ ही न हो सकी।

⇒ केन्द्रीय विधानमण्डल ने साइमन आयोग का स्वागत करने से इंकार कर दिया। लाला लाजपत राय ने सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली में साइमन कमीशन के बहिष्कार का प्रस्ताव पेश किया, जो सारे राष्ट्रीय निर्वाचित प्रतिनिधियों के समर्थन से पास हो गया।

⇒ कम्यूनिष्टों व मजदूर किसान पार्टियों ने भी इसका विरोध किया।

⇒ परन्तु भारत के कुछ दलों व व्यक्तियों के द्वारा इस साइमन आयोग को समर्थन भी प्रदान किया गया।

⇒ मोहम्मद शफी गुट के अलावा मद्रास के जस्टिस पार्टी व पंजाब के यूनिनिस्ट पार्टी का समर्थन आयोग को प्राप्त हुआ।

⇒ दलित वर्गों के प्रतिनिधि अम्बेडकर ने भी इस आयोग के साथ सहयोग करने की नीति का पालन किया।

⇒ पूर्णतः गोरे सदस्यों वाले साइमन कमीशन की नियुक्ति की भारत में ऐसी तीव्र प्रतिक्रिया होगी, वायसराय इरविन को भी शुरू मे इसका अहसास नहीं था। भारत के उदारवादियों ने भी जब इस आयोग के विरोध का निर्णय किया, तो इरविन को निराशा हुई।

⇒ वायसराय इरविन ने ही भारत सचिव बरकनहेड को समझाया कि जांच करने वाली समिति या आयोग में सिर्फ अंग्रेज सदस्य होने चाहिए, जिसे उसने खुशी से स्वीकार किया।

⇒ 3 फरवरी 1928 को जैसे ही साइमन कमीशन बंबई बंदरगाह पर उतरा, 'साइमन वापस जाओ' के नारे से पूरा भारत गूँज उठा।

⇒ लाहौर में एक विरोध प्रदर्शन के दौरान हुए लाठी चार्ज में 'पंजाब केसरी' के उपनाम से प्रसिद्ध लाला लाजपत राय 30 अक्टूबर 1928 को बुरी तरह से घायल हो गए।

- घायलावस्था में उन्होंने कहा था कि 'मेरे शरीर पर पड़ी लाठी की एक - एक चोट ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत पर ठुकी हुई एक-एक कील साबित होगी।
- 17 नवम्बर 1928 को लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गयी।
- लालाजी की मृत्यु पर गांधीजी ने कहा - "आज भारतीय गगन मंडल के एक महान नक्षत्र का लोप हो गया। जब तक भारतीय आकाश में सूर्य चमकता रहेगा, लाला लाजपत राय जैसे व्यक्ति मर नहीं सकते।"
- भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद आदि क्रांतिकारियों ने मिलकर 17 दिसम्बर 1928 को लाठी चार्ज के दोषी जे॰ पी॰ सांडर्स की गोली मारकर हत्या कर दी। इस प्रकार लाला जी की हत्या का बदला लिया गया।
- साइमन आयोग जब लखनऊ पहुँचा तो वहाँ पर भी हुये एक लाठी चार्ज में जवाहर लाल नेहरू और गोविन्द वल्लभ पंत घायल हो गये।
- इन विरोधी वातावरण में भी आयोग कार्य करता रहा और अन्ततः मई 1930 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।
- इसमें भारतीय संविधान के ढांचे को संघीय बनाने की बात तो की गई, परंतु केन्द्र में उत्तरदायी शासन के स्थापना की बात नहीं की गई।
- इसी प्रकार प्रांतों में द्वैध शासन की समाप्ति की बात तो की गई, परन्तु गवर्नर के अधिकारों में किसी भी प्रकार के कटौती की बात नहीं की गयी। इसलिये इसे भारतीयों ने अस्वीकार कर दिया। इस प्रकार साइमन कमीशन असफल रहा।

## नेहरू रिपोर्ट

भारत सचिव बरकनहेड की इस चुनौती का, कि भारतीय मिलकर संविधान की एक ऐसी रूपरेखा तैयार नहीं कर सकते, जो सारे भारतीयों को एकमत से मान्य हो, का जवाब देने के लिए 1928 में बंबई में एम॰ ए॰ अंसारी की अध्यक्षता में एक सर्वदलीय सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में भारतीय संविधान की रूपरेखा तैयार करने हेतु एक समिति का गठन किया गया।

Digvijay Sir GS

⇒ इसमें अध्यक्ष मोतीलाल नेहरू के अतिरिक्त सात अन्य सदस्य थे। सर तेज बहादुर सप्रू, सर अली इमाम, श्री एम. एस. अणे, सरदार मंगल सिंह, श्री शोएब कुरैशी, श्री जी. आर. प्रधान तथा श्री सुभाष चंद्र बोस।

⇒ पंडित जवाहरलाल नेहरू को भी आमंत्रित सदस्य के रूप में शामिल किया गया।

1) कनाडा व द. अफ्रीका की भाँति भारत का दर्जा डोमीनियन स्टेटस के समान हो।

2) भारतीयों को कुछ मौलिक अधिकार प्रदान किये जाये।

3) पृथक निर्वाचक मंडल का अधिकार समाप्त हो और इसके स्थान पर अल्पसंख्यकों के स्थानों के आरक्षण के सिद्धांत को स्वीकार किया जाय।

4) मताधिकार को बढ़ाया जाय।

5) भाषाई आधार पर प्रांतों का गठन हो।

6) भारत में संघीय शासन की व्यवस्था हो, जिसमें अवशिष्ट अधिकार केन्द्र के पास रहे।

7) भारत में संसदीय शासन की व्यवस्था हो, जिसमें विधायिका कार्यपालिका के प्रति उत्तरदायी हो।

⇒ इस रिपोर्ट के प्रावधान निश्चित रूप से काफी महत्वपूर्ण और प्रासंगिक थे, इसलिए इसे 'स्वतंत्र भारत के संविधान का प्राक् रूप' कहा जा सकता है।

⇒ परंतु मुस्लिम लीग और कांग्रेस के युवा वर्गों ने इसका प्रतिकार किया।

⇒ जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व वाले कांग्रेस के युवा वर्गों का यह कहना था कि जब 1927 के मद्रास अधिवेशन में ही कांग्रेस ने 'पूर्ण स्वराज्य' को अपना लक्ष्य निर्धारित किया, तो उससे कम डोमीनियन स्टेटस के मुद्दे पर सरकार के साथ हम समझौता क्यों करें?

⇒ पूर्ण स्वतंत्रता की मांग को मजबूती से प्रस्तुत करने के लिए सुभाष चन्द्र बोस एवं जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस के युवा वर्गों ने 1928 में एक संगठन 'ऑल इंडिया इंडिपेंडेंस लीग' की स्थापना की।

Digvijay Sir GS

⇒ इसके अन्य सदस्य सुभाषचन्द्र बोस के बड़े भाई शरतचंद्र बोस, श्रीनिवास अयंगर, सत्यमूर्ति आदि थे।

⇒ दिसम्बर 1928 में मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन कलकत्ता में आयोजित हुआ। यहां डोमीनियन स्टेटस के मुद्दे पर विवाद काफी बढ़ गया।

⇒ तब गांधी जी के बीच-बचाव पर इन युवा वर्गों को यह कहकर संतुष्ट किया गया कि हमलोग सरकार को 31 दिसम्बर 1929 तक का एक अल्टीमेटम देंगे। यदि वह इस तारीख तक हमारे डोमीनियन स्टेटस की मांग को स्वीकार नहीं करती, तो फिर कांग्रेस 'पूर्ण स्वराज' को हम लक्ष्य निर्धार कर लेगी और उसकी प्राप्ति के लिए एक जनांदोलन भी चलाएगी।

⇒ वायसराय इरविन ने जब इस अल्टीमेटम पर ध्यान नहीं दिया, तो कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में 31 दिसम्बर 1929 को 'पूर्ण स्वराज्य' का प्रस्ताव पारित किया और राष्ट्रीय तिरंगा लहराया गया।

⇒ 26 जनवरी 1930 को रावी नदी के किनारे लाहौर में ही पहली बार 'पूर्ण स्वाधीनता दिवस' मनाया गया।

⇒ पूर्ण स्वाधीनता के इस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु गांधी जी के नेतृत्व में 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' चलाया गया।

⇒ मुस्लिम लीग की यह मांग थी कि अवशिष्ट अधिकार प्रांतों के पास रहे और केन्द्रीय विधानसभा का एक तिहाई स्थान मुस्लिमों के लिए आरक्षित हो। कांग्रेस ने इन दोनों मांगों को मानने से इंकार कर दिया। इस प्रकार नेहरू रिपोर्ट असफल हो गया।

⇒ मुहम्मद अली जिन्ना ने तब नेहरू रिपोर्ट के विरोध में मार्च 1929 में एक चौदहसूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जो कि एक प्रकार से सांप्रदायिक मांगों का दस्तावेज था। कांग्रेस ने उसे अस्वीकार कर दिया।

Digvijay Sir GS